सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': महाप्राण

वज्र और फूल (विद्रोह और सौंदर्य का कवि)

Based on NCERT Kshitij - Chapter 5

NotebookLM

जीवन परिचय: संघर्ष की आग में तपकर

- **जन्म:** सन 1899, महिषादल (बंगाल)। मूल निवासी: गढ़ाकोला (उन्नाव, उत्तर प्रदेश)।
- **शिक्षा:** नौवीं कक्षा तक महिषादल में। संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेज़ी का ज्ञान 'स्वाध्याय' (self-study) से अर्जित किया।
- **प्रेरणा:** रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की विचारधारा का गहरा प्रभाव।
- **संघर्ष:** उनका जीवन दुखों और संघर्षों से भरा था। आत्मीय जनों के असामयिक निधन ने उन्हें भीतर तक तोड़ दिया था।

1055CH05

NotebookLM

अनामिका
परिमल
गीतिका
कुकुरमुत्ता
नए पत्ते

साहित्यिक योगदान: मुक्त छंद के प्रवर्तक

छायावादी रचनाकारों में उन्होंने सबसे पहले मुक्त छंद (Free Verse) का प्रयोग किया। उनकी कविताओं में शोषित, उपेक्षित और पीड़ित जन के प्रति गहरी सहानुभूति है, वहीं शोषक वर्ग और सत्ता के प्रति प्रचंड प्रतिकार का भाव है।

संपूर्ण साहित्य 'निराला रचनावली' के 8 खंडों में प्रकाशित है।

NotebookLM

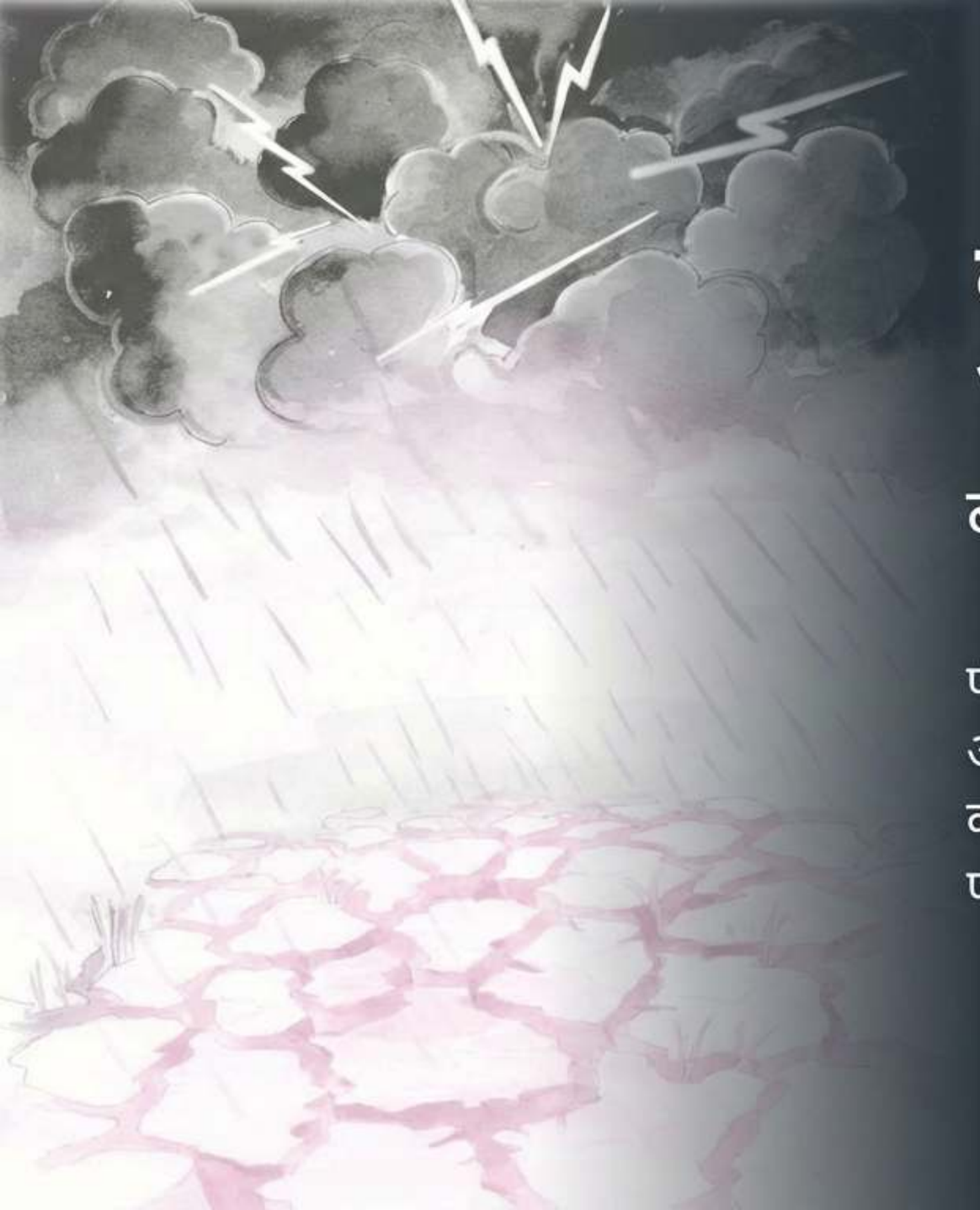

कविता: 'उत्साह' (एक आह्वान गीत)

बादल: निराला का प्रिय विषय

पीड़ित-प्यासे जन की आकांक्षा: बादल तपती धरती को शीतल करके लोगों की प्यास बुझाता है।

विप्लव और क्रांति: बादल 'वज्र' और विध्वंस का प्रतीक है जो पुरानी व्यवस्था को तोड़कर 'नया जीवन' लाता है।

NotebookLM

बादल, गरजो!

घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो—बादल, गरजो!

- बादल 'ललित' (सुंदर) और 'काले घुँघराले' हैं, जैसे किसी बालक की कल्पना का विस्तार हो।
- परंतु, उनके हृदय (उर) में 'विद्युत-छवि' (Image of lightning) और 'वज्र' छिपा है।
- कवि बादल से 'नूतन कविता' और क्रांति का स्वर भरने का आग्रह करता है।

NotebookLM

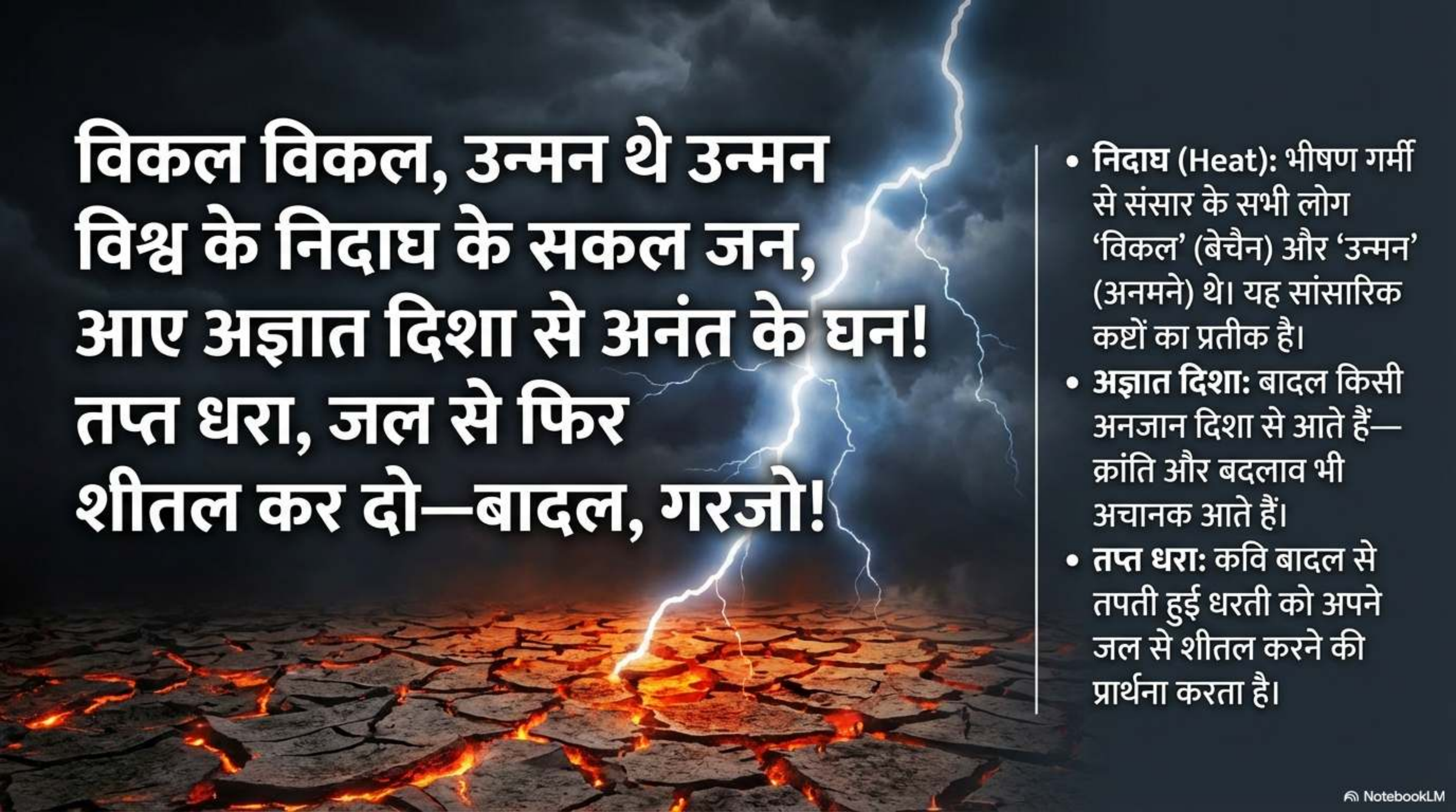

- **निदाघ (Heat):** भीषण गर्मी से संसार के सभी लोग 'विकल' (बेचैन) और 'उन्मन' (अनमने) थे। यह सांसारिक कष्टों का प्रतीक है।
- **अज्ञात दिशा:** बादल किसी अनजान दिशा से आते हैं—क्रांति और बदलाव भी अचानक आते हैं।
- **तप्त धरा:** कवि बादल से तपती हुई धरती को अपने जल से शीतल करने की प्रार्थना करता है।

NotebookLM

शिल्प सौंदर्य: नाद-सौंदर्य की छटा

नाद-सौंदर्य (Phonetic Beauty): कवि ने ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जिनसे बादलों के गरजने और उमड़ने-घुमड़ने की ध्वनि का आभास होता है। उदाहरण: 'घेर घेर घोर गगन'।

प्रश्न: कवि ने ‘बरसो’ की जगह ‘गरजो’ क्यों कहा?

उत्तर: ‘गरजना’ विद्रोह और क्रांति का प्रतीक है। कवि समाज में आलस्य छोड़कर उत्साह और चेतना जगाना चाहता है।

NotebookLM

कविता: 'अट नहीं रही है' (फागुन का सौंदर्य)

यह कविता फागुन (फरवरी-मार्च) महीने की मादकता और सौंदर्य को प्रकट करती है।

'अट नहीं रही है' का अर्थ है 'समा नहीं रही है' (It does not fit/contain)।

फागुन की सुंदरता इतनी अधिक है कि वह प्रकृति और तन-मन में समा नहीं पा रही है; वह छलक रही है।

NotebookLM

फागुन का सौंदर्य: अट नहीं रही है

अट नहीं रही है आभा फागुन की
तन सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो हट नहीं रही है।

- **मानवीकरण (Personification):** फागुन को एक जीवित प्राणी की तरह साँस लेते हुए दिखाया गया है। उसकी सुगंध हर घर को भर देती है।
- **सम्मोहन:** सौंदर्य इतना व्यापक है कि कवि चाहकर भी अपनी आँखें उससे हटा नहीं पा रहा है।

NotebookLM

फागुन का सौंदर्य: 'अट नहीं रही है' (भाग 2)

पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में मंद-गंध-पुष्प-माल,
पाट-पाट शोभा-श्री पट नहीं रही है।

- वृक्षों की डालियाँ नए पत्तों से लद गई हैं—कहीं हरे पत्ते हैं तो कहीं कोमल लाल पत्ते।
- **उर (Heart):** प्रकृति के गले में भीनी-भीनी-भीनी सुगंध वाली फूलों की माला ('मंद-गंध-पुष्प-माल') पड़ी हुई है।
- **'पाट-पाट'** (जगह-जगह) सुंदरता का खजाना इतना भर गया है कि वह समा नहीं रहा है।

NotebookLM

निराला के दो रूप: वज्र और फूल

उत्साह (Utsah)

- **स्वर:** ओजपूर्ण, पौरुष, विद्रोही
- **प्रतीक:** बादल, वज्र, नाद
- **उद्देश्य:** सामाजिक परिवर्तन और नवजीवन

अट नहीं रही है

- **स्वर:** कोमल, शृंगारिक, रूमानी
- **प्रतीक:** फूल, सुगंध, फागुन
- **उद्देश्य:** प्राकृतिक सौंदर्य का पान और मन की प्रसन्नता

छायावादी विशेषता—अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया (प्रकृति) से सामंजस्य बिठाना।

NotebookLM

शब्द-संपदा (Vocabulary Vault)

धराधर (Dharadhar): बादल

उन्मन (Unman): कहीं मन न टिकने की स्थिति, अनमनापन

निदाघ (Nidagh): गर्मी

वज्र (Vajra): कठोर, भीषण

अट (Att): समाना, प्रविष्ट

पाट-पाट (Paat-Paat): जगह-जगह

NotebookLM

प्रश्न-अभ्यास (Reflection)

Q: कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा गया है?
A: क्योंकि यह बादलों की गर्जन के माध्यम से लोगों में क्रांति, चेतना और नया जोश भरने वाला गीत है।

Q: 'अट नहीं रही है' कविता में कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही?
A: फागुन का सौंदर्य इतना व्यापक और आकर्षक है कि वह कवि को सम्मोहित कर लेता है।

Q: 'अज्ञात दिशा' से आने वाले बादल किसका प्रतीक हैं?
A: वे जीवन में अचानक आने वाले बदलावों और क्रांति के अनपेक्षित आगमन का प्रतीक हैं।

NotebookLM

निष्कर्ष

सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ जीवन को समग्र दृष्टि से देखते हैं। उनकी **कविताओं** में **‘ललित कल्पना’** और ‘क्रांति-चेतना’ दोनों का मिलन है। जैसे बादल तपती धरती को शीतल करते हैं, वैसे ही साहित्य और कविता समाज के दुखों को हरने और नवजीवन देने का कार्य करती है।

NotebookLM

संदर्भ (References)

NCERT Hindi Textbook 'Kshitij' - Class 10, Chapter 5.

This presentation is a visual study aid based on the literary works of Nirala.

© NCERT
not to be republished

NotebookLM